ISSN:2583-8849

हिंदी कविता में मेघ और वर्षा: प्रतीक और बिंब

डॉ . महीपाल दान

जब मूल सिला अनेकों खंडों में खंडित हुई तो इसमें एक खंड हम पृथ्वी थे, जहां पर मानवता पनपी। प्रारंभ में यहां आग ही थी , जो करोड़ों वर्षों तक धधकती रही, आग से बादल बने, वर्षा हुई और लाखों वर्षों तक वर्षा होती रही। इस बारिश से पृथ्वी की देह पिचक गई, जैसे बैंगन को गर्म करने के उपरांत ठंडा होने की स्थिति स्वरूप। इस पिचकने में समंदर बने, पहाड़ एवं नदियां बनी और लाखों वर्षों बाद इसी पानी में से अंकुर फूटा । अंकुर का धर्म है, पृथ्वी की समूची गुरुत्वाकर्षण शक्ति के विरुद्ध आकाश की तरफ बढ़ना। यही चेतना है। साहित्य इसी चेतन रूप में प्रतिरोध है। अतः साहित्य की चेतना मनुष्यता के नवजात रूप से ही अस्तित्व में है। प्रकृति और मनुष्य का संबंध जितना पुराना है, साहित्य और प्रकृति का संबंध भी उतना ही प्राचीन है। मनुष्य ने जब पहली बार आकाश में उमड़ते-घुमड़ते बादलों को देखा होगा, जब पहली वर्षा की बूँद उसके चेहरे पर गिरी होगी और जब सूखी धरती से उठती सोंधी गंध ने उसके मन को स्पर्श किया होगा, तभी से प्रकृति उसके अनुभव और अभिव्यक्ति का अभिन्न हिस्सा बन गई होगी। यही कारण है कि भारतीय साहित्य की दीर्घ परंपरा में प्रकृति केवल पृष्ठभूमि नहीं है, बल्कि वह मनुष्य के भाव-जगत की सक्रिय सहभागी रही है।

इसी प्रकृति के विविध रूपों में मेघ और वर्षा का स्थान अत्यंत विशिष्ट है। मेघ आकाश में दिखाई देने वाला जल-समूह मात्र नहीं, बल्कि भारतीय काव्य-चेतना में वह कभी प्रेम का दूत है, कभी विरह का सहचर, कभी आशा का संदेशवाहक, कभी नवजीवन का संवाहक और कभी क्रांति की गर्जना बन जाता है। इसी प्रकार वर्षा केवल ऋतु-परिवर्तन की प्राकृतिक घटना नहीं है; वह कहीं प्रेम की पुलक है, कहीं विरहिणी की आँखों से झरते आँसुओं का बिंब, कहीं किसान के जीवन की आशा और कहीं धरती के पुनर्जन्म का प्रतीक।

यदि मेघ को केवल प्रकृति मानें तो वह आकाश में दिखाई देने वाला एक दृश्य है; लेकिन जब वही मेघ कवि की अनुभूति से जुड़ता है, तब वह प्रतीक बन जाता है। और जब कवि शब्दों के माध्यम से उस मेघ का ऐसा चित्र उपस्थित करता है कि पाठक के सामने घिरते बादल, चमकती बिजली, बरसती बूँदें और भीगती धरती सजीव हो उठती है, तब वह बिंब का रूप ग्रहण कर लेता है। और जब कोई प्रतीक ही कविता की गहराई के मूल धरातल को जीवंत रूप में स्पष्ट करे दें, तो वह प्रतीक बिंबात्मक रूप से अपना महत्व सिद्ध करता है।

यहीं से मेरे शोध-पत्र का मूल प्रश्न सामने आता है— हिंदी कविता में मेघ और वर्षा केवल प्रकृति के विषय हैं अथवा वे मनुष्य के अंतर्मन, सामाजिक जीवन और सांस्कृतिक चेतना को व्यक्त करने वाले व्यापक प्रतीक और बिंब भी हैं?

कविता में प्रतीक वह माध्यम है जिसके द्वारा कोई दृश्य वस्तु किसी व्यापक भाव, विचार या अनुभूति का प्रतिनिधित्व करती है। मेघ स्वयं प्राकृतिक घटना है; लेकिन जब कालिदास उसे यक्ष का दूत बना देते हैं तो वह प्रेम और विरह का प्रतीक बन जाता है। जब निराला बादल से कहते हैं— “बादल, गरजो!” तो बादल केवल वर्षा करने वाला बादल नहीं रह जाता; उसमें ऊर्जा, परिवर्तन और नवसृजन का अर्थ जुड़ जाता है। इसी प्रकार बिंब कविता में शब्दों द्वारा निर्मित वह संवेदनात्मक चित्र है जो पाठक के मन में उपस्थित होता है। उदाहरण के लिए—**“अमल धवल गिरि के शिखरों पर ,बादल को घिरते देखा है।”** यहाँ हिमालय की श्वेत चोटियों और उनके ऊपर घिरे बादलों का एक सजीव दृश्य हमारे सामने उपस्थित होता है। नागार्जुन की यह कविता बिंबों की ऐसी श्रृंखला बनाती है जिसमें हिमालय, मानसरोवर, झील, हंस, कस्तूरी मृग, देवदार और किन्नर-किन्नरियाँ एक साथ उपस्थित होते हैं। अतः कहा जा सकता है कि प्रतीक अर्थ की गहराई देता है और बिंब उस अर्थ को दृश्य एवं संवेदनात्मक रूप प्रदान करता है।

मेघदूत में कुबेर का यक्ष अपनी प्रिया से दूर निर्वासित है। आषाढ़ के प्रथम दिन वह आकाश में पर्वत-शिखर से आलिंगित मेघ को देखता है और उसके माध्यम से अपनी प्रिया तक संदेश भेजने की कल्पना करता है। मूल पाठ में— "आषाढस्य प्रथमदिवसे मेघमाश्लिष्टसानुं..." का प्रसंग आता है। आगे यक्ष कहता है—

"धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः
संदेशार्थाः क्व पटुकरणैः प्राणिभिः प्रापणीयाः।"1

(भावार्थ यह है कि यक्ष को यह ज्ञात है कि मेघ कोई चेतन प्राणी नहीं, बल्कि धूम (वाष्प), ज्योति, जल और वायु के संयोग से निर्मित प्राकृतिक पिंड है। दूसरी ओर संदेश पहुँचाने के लिए ऐसे प्राणी की आवश्यकता होती है जिसके पास बुद्धि, विवेक, संवेदना और संदेश को समझने तथा व्यक्त करने की क्षमता हो। इसलिए यक्ष स्वयं आश्चर्य करता है कि मेघ कहाँ और संदेश को समझकर पहुँचाने वाले बुद्धिमान प्राणी कहाँ!)

यहाँ प्राकृतिक मेघ को मानवीय संदेश का वाहक बनाया गया है।मेघ का प्रतीकात्मक अर्थ कालिदास के यहाँ कई रूपों में परिलक्षित होता दिखाई देता है जैसे दूत के रूप में, प्रेम और विरह के रूप में भी और कहीं आशा और स्मृति के रूप में भी। यक्ष मेघ को केवल संदेश देने के लिए नहीं चुनता; वह मेघ में एक संवेदनशील सहचर देखता है। यहाँ निर्जीव प्रकृति का मानवीकरण होता है। कालिदास ने मेघ की गति के साथ प्रकृति के असंख्य बिंबों को जोड़ा है— नदियाँ, पर्वत, वन, पुष्प, पक्षी, नगर, स्त्रियाँ और ऋतु-सौंदर्य।

भारतीय काव्य-परंपरा में वर्षा प्रेमियों के लिए विशेष ऋतु मानी गई है। लेकिन मेघदूत में यही वर्षा विरही यक्ष की पीड़ा को तीव्र करती है। यहाँ एक महत्वपूर्ण काव्य-सत्य सामने आता है, प्रकृति का एक ही दृश्य व्यक्ति की मानसिक स्थिति के अनुसार अलग अर्थ ग्रहण कर सकता है। प्रेमी के लिए वर्षा आनंद है। विरही के लिए वेदना। किसान के लिए आशा। धरती के लिए जीवन और कवि के लिए काव्य।

कालिदास से आगे बढ़ते हुए जब हम हिंदी कविता की ओर आते हैं तो मेघ और वर्षा की अर्थवत्ता निरंतर विस्तृत होती दिखाई देती है। आदिकालीन हिंदी साहित्य में मेघ और वर्षा का प्रयोग केवल प्राकृतिक दृश्य-वर्णन के लिए नहीं हुआ, बल्कि इनके माध्यम से वीरता, विरह, प्रेम, आध्यात्मिक अनुभूति, लोकजीवन और ऋतु-संवेदना को भी अभिव्यक्ति मिली। भक्तिकाल में वर्षा और मेघ विरह एवं भक्ति की अनुभूति को तीव्र करते हैं। रीतिकाल में वही मेघ, बिजली, पपीहा और वर्षा श्रृंगार के उद्दीपन बन जाते हैं। छायावादी कवियों के यहाँ प्रकृति बाहरी दृश्य न रहकर अंतर्मन की प्रतिच्छाया बन जाती है।

आदिकालीन हिंदी कवियों के लिए मेघ आकाश में गतिशील, विशाल और प्रभावशाली प्राकृतिक सत्ता है। उसका गर्जन, उसका उमड़ना-घुमड़ना और वर्षा करना मनुष्य के भीतर भी अनेक भाव जगाता है। मेघ का एक प्रमुख बिंब वीरता और शक्ति से जुड़ता है। युद्ध के प्रसंगों में बादलों की गर्जना और युद्ध-नाद के बीच साम्य स्थापित किया जाता है। वीर योद्धा की गति, सेना का विस्तार तथा रणभूमि का कोलाहल कई बार मेघ और उसके गर्जन के माध्यम से प्रभावशाली बनाया जाता है। जैसे युद्ध की उग्रता का अत्यंत प्रभावशाली चित्र है—

"करै मार मारं महाबीर धीरं।
भये मेवधारा बरवंत तीरं॥
परे पंच पुंडीर सा चंद कयौ।
तबै साहि गोरी चिन्हाव चढ्यौ॥" (अर्थात महावीर योद्धा अत्यंत उग्र होकर युद्ध कर रहे हैं। उनके बाणों की बौछार ऐसी प्रतीत होती है मानो वर्षा की धाराएँ बरस रही हों। यहाँ अस्त्रों की वर्षा और मेघ की वर्षा का अद्भुत साम्य है।)

आदिकाल में प्रेमाख्यानों और लोकाभिमुख काव्य-परंपरा में वर्षा और मेघ का संबंध विरह से भी दिखाई देता है। वर्षा ऋतु में जब चारों ओर हरियाली, बादल और शीतलता होती है, तब प्रिय से दूर व्यक्ति का विरह और अधिक तीव्र हो जाता है। मेघ को देखकर विरही नायक या नायिका को अपने प्रिय की स्मृति आती है। मेघ दूर-दूर तक विचरण करता है, इसलिए वह संदेशवाहक की कल्पना को भी जन्म देता है।

भक्तिकालीन हिंदी साहित्य में मेघ और वर्षा का बिंब बहुआयामी है। तुलसीदास के यहाँ मेघ कभी विरही मन की व्याकुलता को उद्दीप्त करते हैं—"घन घमंड नभ गरजत घोरा, प्रियाहीन डरपत मन मोरा" , तो कभी संतों के रूप में राम-यश की वर्षा करने वाले आध्यात्मिक मेघ बन जाते हैं- "बेद पुरान उदधि घन साधू, बरषहिं राम सुजस बर बारी।" इसी प्रकार "बरषा रितु रघुपति भगति" में वर्षा ऋतु स्वयं भक्ति का प्रतीक बन जाती है। सूरदास के यहाँ इंद्र के मेघ कृष्ण की गोवर्धन-लीला की पृष्ठभूमि तैयार करते हैं, जबकि विद्यापति के यहाँ गरजते और बरसते मेघ विरहिणी के सूने हृदय की पीड़ा को तीव्र करते हैं। इस प्रकार भक्तिकाल में मेघ-वर्षा बाह्य प्रकृति से आगे बढ़कर विरह, भक्ति, आध्यात्मिकता, दैवी शक्ति और भाव-जागरण के प्रतीक बन जाते हैं।

हिंदी साहित्य में बारहमासा वर्णन शैली में भक्ति काल के सूफी कवि मलिक मोहम्मद जायसी ने नागमती वियोग खंड में बादल और वर्षा का जिस प्रकार से विरहानुभूतिपूर्वक चित्रण किया है, वह अपने आप में लोक की धरातल से विरह की गहरी संवेदना तक विस्तृत है। जैसे -

चमकि बीजु घन गरजि तरासा।
बिरह काल होइ जीउ गरासा॥
बरसै मघा झकोरि झकोरी।
मोर दुइ नैन चुवैं जस ओरी॥ (अर्थात भादों की घोर अँधेरी रात, बिजली की चमक और बादलों की गर्जना नागमती के विरह को और अधिक भयावह बना देती है। उसके लिए बिजली की चमक और बादलों की गर्जना सुखद प्राकृतिक दृश्य नहीं, बल्कि विरह-काल का आतंक बन जाती है। बाहर मेघ झकोर-झकोरकर बरस रहे हैं और भीतर नागमती की आँखें आँसुओं से बरस रही हैं।)

रीतिकालीन हिंदी साहित्य में मेघ और वर्षा का स्वरूप भक्तिकाल की अपेक्षा अधिक श्रृंगारपरक एवं अलंकारिक हो जाता है। केशवदास की 'रसिकप्रिया' से लेकर बिहारी, देव, घनानंद और पद्माकर तक पावस-प्रकृति नायक-नायिका के प्रेम, संयोग और वियोग को उद्दीप्त करने वाली शक्ति के रूप में उपस्थित होती है। काले मेघ, चमकती दामिनी, वर्षा की धार, मंद पवन, मोर की पुकार और पपीहे की आवाज—ये सभी रीतिकाव्य में श्रृंगार के उद्दीपन-विभाव बनते हैं। विशेषतः विरहिणी नायिका के लिए वर्षा ऋतु प्रिय की स्मृति को तीव्र करती है, जबकि संयोगिनी के लिए वही ऋतु प्रेमानंद की पृष्ठभूमि बन जाती है। इस प्रकार रीतिकाल में मेघ और वर्षा प्रकृति के स्वतंत्र चित्र न रहकर मानवीय प्रेमानुभूति के सौंदर्यात्मक विस्तार बन जाते हैं। केशवदास के यहाँ वर्षा का एक महत्त्वपूर्ण रूप संयोग का उद्दीपन है। घनघोर बादल, बिजली की चमक, मोर की पुकार और वर्षा की ध्वनि प्रेमी-प्रेमिका के मिलन की पृष्ठभूमि निर्मित करते हैं। 'रसिकप्रिया' के एक प्रसंग में वर्षा-परिवेश को इस प्रकार मूर्त किया गया है—

"घननि की घोर सुनि, मोरनि को सोर सुनि,
सुनि सुनि केसव अलाप अलीजन को।
दामिनी दमक देखि देह की दिपति देखि,
देखि सुभ सेज देखि सदन सुबन को।"

आधुनिक हिंदी कविता में मेघ और वर्षा की परंपरा भक्तिकाल तथा रीतिकाल से आगे बढ़ते हुए एक नया अर्थ-विस्तार प्राप्त करती है। अब मेघ केवल विरही नायक-नायिका के उद्दीपन या प्रकृति-सौंदर्य के साधन नहीं रह जाते,

बल्कि वे क्रांति, परिवर्तन, जीवन, आशा, सामाजिक मुक्ति, स्मृति, अकेलेपन, संघर्ष और मानवीय संवेदना के प्रतीक भी बनते हैं। छायावादी कवियों ने वर्षा और मेघ में प्रकृति की रहस्यमयता तथा सौंदर्य देखा, जबकि निराला ने बादल को विप्लव और सामाजिक परिवर्तन की शक्ति में रूपांतरित किया। नागार्जुन के यहाँ मेघ विराट प्राकृतिक अनुभव और कालिदासीय स्मृति का माध्यम बनते हैं तथा भवानीप्रसाद मिश्र के यहाँ वर्षा व्यक्तिगत स्मृति और घर की आत्मीयता से जुड़ जाती है।

आधुनिक हिंदी कविता में मेघ को व्यापक सामाजिक और क्रांतिकारी अर्थ प्रदान करने वाले प्रमुख कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' हैं। उनकी प्रसिद्ध कविता 'बादल-राग' में बादल केवल वर्षा करने वाली प्राकृतिक शक्ति नहीं है, बल्कि वह शोषित और पीड़ित जीवन में परिवर्तन लाने वाली विप्लवकारी शक्ति बन जाता है। बादल-राग' में निराला लिखते हैं—

"जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर,
तुझे बुलाता कृषक अधीर,
ऐ विप्लव के वीर!
चूस लिया है उसका सार,
हाड़-मात्र ही है आधार,
ऐ जीवन के पारावार!"

छायावादी कवि सुमित्रानंदन पंत के यहाँ वर्षा प्रकृति के अत्यंत सूक्ष्म, रंगात्मक और गतिशील सौंदर्य का निर्माण करती है। उनकी प्रसिद्ध कविता 'पर्वत प्रदेश में पावस' वर्षा के दृश्यात्मक और गतिशील बिंबों का श्रेष्ठ उदाहरण है।कविता के अंत में वर्षा का विराट रूप सामने आता है—

"है टूट पड़ा भू पर अंबर!
धँस गए धरा में सभय शाल!
उठ रहा धुआँ, जल गया ताल!
यों जलद-यान में विचर-विचर
था इंद्र खेलता इंद्रजाल।"

महादेवी वर्मा के काव्य में भी मेघ और वर्षा का प्रयोग अत्यंत सूक्ष्म और प्रतीकात्मक है। उनके यहाँ बादल केवल प्राकृतिक दृश्य नहीं, बल्कि वेदना, विरह, करुणा, आत्म-अभिव्यक्ति और रहस्यात्मक प्रिय की अनुभूति का रूप ग्रहण करता है। उनकी काव्य-भाषा में प्रतीकात्मकता और चाक्षुष, श्रव्य तथा स्पर्शिक बिंबों का विशेष महत्त्व माना गया है। महादेवी की सबसे प्रसिद्ध पंक्तियों में—

"मैं नीर भरी दुःख की बदली!"
"स्पंदन में चिर निस्पंद बसा,"
"क्रंदन में आहत विश्व हँसा,"
"नयनों में दीपक से जलते,
पलकों में निर्झरिणी मचली।"

यहाँ 'बदली' कवयित्री के आत्मस्वरूप का प्रतीक है। बादल जल से भरा हुआ है और कवयित्री दुःख से। जिस प्रकार बादल अपने भीतर जल संचित करके अंततः बरसता है, उसी प्रकार महादेवी के भीतर संचित वेदना आँसू बनकर व्यक्त होती है।

आधुनिक हिंदी कविता में नागार्जुन की 'बादल को घिरते देखा है' मेघ-वर्णन की अत्यंत महत्त्वपूर्ण कविता है। यह कविता विशेष रूप से इसलिए उल्लेखनीय है क्योंकि इसमें आधुनिक कवि का अनुभव कालिदास और 'मेघदूत' की परंपरा से संवाद करता है। कविता आरंभ होती है— "अमल धवल गिरि के शिखरों पर, बादल को घिरते देखा है।"आगे बादल से गिरते हिमकणों का अत्यंत सुंदर बिंब है—

"छोटे-छोटे मोती जैसे
उसके शीतल तुहिन कणों को
मानसरोवर के उन स्वर्णिम
कमलों पर गिरते देखा है।"

यहाँ आधुनिक कवि का मेघ कालिदास के मेघ से संवाद करता है। किंतु नागार्जुन केवल कालिदास की पुनरावृत्ति नहीं करते। वे अपने प्रत्यक्ष अनुभव को प्राथमिकता देते हुए कहते हैं—

"मैंने तो भीषण जाड़ों में
नभ-चुंबी कैलाश शीर्ष पर,
महामेघ को झंझानिल से
गरज-गरज भिड़ते देखा है।"

भवानीप्रसाद मिश्र की कविता 'घर की याद' आधुनिक कविता में वर्षा के एक बिल्कुल अलग अर्थ को सामने लाती है। यहाँ वर्षा प्रकृति-सौंदर्य का साधन मात्र नहीं है; वह घर, परिवार, आत्मीयता और स्मृति को जागृत करने वाली शक्ति बन जाती है । निराला के "विप्लव के बादल" ने आगे के कवियों को भी प्रभावित किया। धर्मवीर भारती की कविता 'निराला के प्रति' में बादल को सीधे सामाजिक परिवर्तन और क्रांति के संदर्भ में देखा गया है। भारती लिखते हैं— "और आज नव मेघदूत को , युग-परिवर्तक कवि ने , विप्लव का गुरुतर आदेश दिया था!"

और जब हम समकालीन कविता की ओर देखते हैं, तो मेघ और वर्षा के अर्थ और भी व्यापक हो जाते हैं। आज वर्षा के साथ जल-संकट, पर्यावरणीय असंतुलन, जलवायु परिवर्तन, बाढ़, सूखा और प्रकृति के संकट जैसे प्रश्न भी जुड़ गए हैं। इस प्रकार आज का मेघ केवल कवि के प्रेम और विरह का साथी नहीं, बल्कि मनुष्य और पृथ्वी के बदलते संबंधों का साक्षी भी है। इसलिए हिंदी कविता में मेघ और वर्षा की यात्रा वास्तव में भारतीय संवेदना की यात्रा है।

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की कविता 'मेघ आए' समकालीन हिंदी कविता में मेघ के मानवीकरण का अत्यंत सुंदर उदाहरण है। कविता की पहली ही पंक्ति है—

"मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के
आगे-आगे नाचती-गाती बयार चली,
दरवाज़े-खिड़कियाँ खुलने लगीं गली-गली"

अतः हिंदी कविता में मेघ और वर्षा की प्रतीकात्मक और बिंबात्मक स्वरूप की समग्र परम्परा का मूल्यांकन करे तो , कालिदास के यहाँ मेघ संदेश है, आदिकाल में वीरता और शौर्य के प्रतीक है, भक्तिकाल में विरह, रीतिकाल में श्रृंगार, छायावाद में अंतर्मन, निराला के यहाँ विप्लव, प्रगतिशील कविता में जनजीवन की आशा, और समकालीन कविता में पर्यावरणीय चेतना। अर्थात् एक ही मेघ, अलग-अलग युगों में

अलग-अलग अर्थों से बरसता रहा है। कभी वह यक्ष की आँखों का संदेश लेकर चला, कभी गोपी के विरह को और गहरा कर गया, कभी प्रेमियों के मिलन की ऋतु बना, कभी कवि के अंतर्मन का दर्पण हुआ, कभी क्रांति की गर्जना बना और आज कभी सूखी धरती की अंतिम आशा बनकर हमारे सामने खड़ा है।

इसी बहुआयामी दृष्टिकोण को केंद्र में रखते हुए यह देखने का प्रयास किया गया है कि विभिन्न कालखंडों के कवियों ने मेघ और वर्षा को किस प्रकार अपनी संवेदना, कल्पना, सामाजिक चेतना और जीवन-दृष्टि का माध्यम बनाया है तथा समय के साथ इनके प्रतीकात्मक और बिंबात्मक अर्थ किस प्रकार परिवर्तित होते गए हैं। अंततः यही कहा जा सकता है— "मेघ आकाश में जितना दिखाई देता है, उससे कहीं अधिक वह कविता के भीतर बरसता है; उसकी बूँदें केवल धरती को नहीं भिगोतीं, वे मनुष्य की स्मृतियों, संवेदनाओं और स्वप्नों को भी सींचती हैं।"

संदर्भ ग्रंथ सूची

महाकवि कालिदास — मेघदूतम्, पूर्वमेघ, श्लोक 5
चंदबरदाई, पृथ्वीराज रासो, रेवातट समय, संबंधित छंद 48—51,
तुलसीदास, रामचरितमानस, किष्किंधाकांड एवं बालकांड।
मलिक मुहम्मद जायसी, पद्मावत, 'नागमती वियोग खंड/बारहमासा'।
केशवदास, रसिकप्रिया, कवित्त 386,
हजारीप्रसाद द्विवेदी, हिंदी साहित्य : उद्भव और विकास।
रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास।
सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', निराला संचयिता, संपादक रमेशचंद्र शाह, वाणी प्रकाशन,
महादेवी वर्मा, 'मैं नीर भरी दुःख की बदली', नीरजा
सुमित्रानंदन पंत, स्पर्श, भाग-2, एनसीईआरटी, 'पर्वत प्रदेश में पावस'।
नागार्जुन, अंतरा, भाग-1, एनसीईआरटी, 2022, 'बादल को घिरते देखा है'।
धर्मवीर भारती, 'निराला के प्रति' कविता
सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, 'मेघ आए', क्षितिज, भाग-1, एनसीईआरटी,

नाम — डॉ. महीपाल दान
सहायक आचार्य,हिंदी
सेठ मथुरादास बिनानी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय नाथद्वारा

